भारत सरकार
पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय
लोक सभा
अतारांकित प्रश्न सं. 1296
28.06.2019 को उत्तर के लिए

वनाच्छादित भूमि

1296. श्री रामप्रीत मंडल:

क्या **पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या देश के पर्यावरण को साफ और स्वास्थ्य रखने के लिए वन अपरिहार्य है; और

(ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और भारत के कुल भूमि क्षेत्र की तुलना में कितनी प्रतिशत भूमि वनाच्छादित है?

<u>उत्तर</u>

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन राज्य मंत्री
(श्री बाबुल सुप्रियो)

(क) और (ख) जी हां। देश के पर्यावरण को स्वच्छ और स्वस्थ रखने के लिए वनों की अत्यधिक आवश्यकता होती है। वन विभिन्न प्रकार के पर्यावरणीय लाभ और सेवाएं प्रदान करते हैं। पेड़ अपने पत्तों के माध्यम से कार्बन डाईऑक्साइड, सल्फर डाईऑक्साइड जैसे प्रदूषक तत्वों को भारी मात्रा में अवशोषित करके और वातावरण में ऑक्सीजन मुक्त करके प्रदूषित वायु को शुद्ध करते हैं। वृक्ष स्वच्छ वायु, जल और मिट्टी उपलब्ध कराकर शहरी पर्यावरण को स्वस्थ रखते हैं। वृक्ष, विशेष रूप से चौड़ी पत्तियों वाले वृक्ष, एयरोसोलों और सूक्ष्म कणों को अवशोषित करते हैं और वातावरण के लिए धूल परिशोधकों का काम करते हैं। वनावरण से वर्षाजल अवशोषित होता है और नालियों में बहते पानी को मिट्टी के अंदर रिसने का अवसर मिलता है। इस प्रकार भूमिगत जल का स्तर अनुरक्षित रहता है और जमीन के अंदर पानी के सूख जाने की घटना में कमी होती है।

भारतीय वन सर्वेक्षण, देहरादून, जो इस मंत्रालय का एक अधीनस्थ संगठन है, द्वि-वार्षिक आधार पर देश के वनावरण का आकलन करता है और उसके निष्कर्ष भारत वन स्थिति रिपोर्ट (आईएसएफआर) में प्रकाशित किए जाते हैं। नवीनतम रिपोर्ट अर्थात् आईएसएफआर-2017 के अनुसार, देश में कुल वनावरण और वृक्षावरण 8,02,088 वर्ग किमी (वनावरण 7,08,273 वर्ग किमी, वृक्षावरण 93,815 वर्ग किमी) है, जो देश के भौगोलिक क्षेत्रफल का 24.39% है। आईएसएफआर-2015 में दर्ज की गई वृद्धि की तुलना में कुल वनावरण और वृक्षावरण में 8021 वर्ग किमी (वनावरण 6778 वर्ग किमी, वृक्षावरण 1243 वर्ग किमी) की वृद्धि हुई है।

******